लक्ष्मी नारायण दुबे महाविद्यालय,

मोतिहारी, पूर्वी चम्पारण

आदिकाल की परिस्थितियाँ

डॉ. सन्तोष विश्नोई, सहायक प्रोफेसर,

हिन्दी विभाग

Q.1. हिन्दी साहित्य के आदिकाल (वीरगाथा काल) का सामान्य परिचय प्रस्तुत करते हुए उसके नामकरण की समस्या पर विचार कीजिए।

Ans ⇒ सातवीं सदी के उत्तरार्द्ध से हिन्दू राज्यों की केन्द्रीभूत सत्ता विनष्ट होने लगी। उत्तर-पश्चिम के मुसलमानों ने इससे लाभ उठाकर बारहवीं सदी में उत्तर भारत के अधिकांश भागों पर कब्जा कर लिया। इस काल का इतिहास प्राचीन भारत की वृद्धावस्था का इतिहास है, शक्तिहीन, विवश, और पंगु। यह अनेक छोटे-छोटे राज्यों के उत्थान-पतन की कहानी है, आपसी कलह-द्वेष के संघर्ष में गुथी हुई है। राठौर, सोलंकी, पँवार, कछवाहा, परिहार, चंदेल, तोमर, चौहान आदि राजपूतों का शासन छिट-पुट चल रहा था। राजनीतिक परिस्थिति अनिश्चित थी। पारस्परिक युद्ध प्रतिवर्ष वर्षा की भाँति होता रहता था। और उस पर मुसलमानी आतंक बिजली और वज्र की तरह त्रासद जैसा दीखता था।

(i) राजनीतिक परिस्थितियाँ — ऐसी राजनीतिक अशांति के युग में जो साहित्य रचा गया उसमें तत्कालीन परिस्थिति परिलक्षित होती है। राजपूत, राजाओं के दरबार में बहुत से चारण और भाट रहते थे। ये लोग अपने आश्रयदाताओं की प्रशस्तियाँ गाते थे और उनके वंश तथा चरित्र का बखान बड़े दर्पयुक्त ढंग से दैवी आख्यानों में सजाकर करते थे। युद्ध के समय अपने आश्रयदाताओं और सैनिकों को प्रोत्साहित करते

थे और कभी-कभी खुद तलवार लेकर युद्ध में प्रवृत होते थे। शांति के समय वे उनके रूप, गुण, ऐश्वर्य आदि की महिमा बखानते थे। सन् 1000 ई० से लेकर 1400 ई० तक के इस चार सौ वर्ष के काल को हम वीरगाथा काल कहते है क्योंकि इस अवधि की अधिकतर रचनाओं में वीर रस की प्रधानता है।

iii) साहित्यिक परिस्थितियाँ :- इस काल की रचनाएँ अनेक है, पर सभी को अब विद्वान संदेह की दृष्टि से देखते है और उनकी प्रमाणिकता पर विवाद करते है। प्राचीन इतिहास में पुंग या पुष्प नामक कवि और दलपति विजय नामक कवि तथा उनका खुमान रासो, भुवाल कवि और उनकी भगवद्‌गीता, मोहनलाल द्विज तथा उनकी रचना 'पत्तलि' भट्ट केदार और उनकी रचना 'जयचंद्र प्रकाश' तथा मधुकर उनकी 'जयमयंक' जस चंद्रिका' वास्तव में अनिश्चित और पूर्णतः संदिग्ध है।

इनके अतिरिक्त जो कवि निश्चित रूप में मिलते है, वे है - नरपति नल्ह, चंद, जगनिक, शारंगधर और नल्हसिंह भट्ट।

नरपति नाल्ह का ग्रंथ बीसलदेव रासो गीतात्मक है। यह कथा गीति-रूप में होते हुए भी प्रबन्धात्मकता लिए हुए है। अनेक प्रकार की घटनाओं से कथावस्तु सजायी गयी है। इसमे धार के राजा भोजराज की पुत्री राजमती और अजमेर के चौहान राजा बीसलदेव के विवाह, संयोग, वियोग और पुनर्मिलन का वर्णन है।

अतः इसमें वीर रस की अपेक्षा शृंगार ही प्रधान है। यह ग्रंथ अपने मूल रूप में अप्राप्य है।

चन्द या चंदबरदाई हमारे साहित्य का प्रथम महाकवि है। और उसकी रचना पृथ्वीराज रासो प्रथम प्रबंध काव्य है माना जाता है। उनहत्तर अध्यायों में महाराज पृथ्वीराज चौहान की यशोगाथा चन्द ने इस महाग्रंथ में वर्णन की है। किन्तु पृथ्वीराज रासो अपने मूल रूप में नही मिलता। जो मिलता है उसमें बहुत से अंश बाद के जोड़े हुए है। इसलिए अनेक इतिहासकार पृथ्वीराज रासो को ही जाली मानते है। कुछ लोग तो यह भी स्वीकार नहीं करते कि चंद नामक कोई कवि कवि था। डॉ० बूलर, मारिसन, गौ ही ओझा, मुंशी देवी प्रसाद आदि रासो को अप्रमाणिक मानते है। पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी रासो को अर्द्धप्रमाणिक मानते है।

वीरगाथात्मक काव्य :- जगनिक वीर-रस प्रधान गीतिकाव्य आल्हा-खंड का रचयिता माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि कालिंजर के अधिपति परमाल के यहाँ जगनिक रहता था जिसने महोबा के प्रसिद्ध योद्धा आल्हा खंड और ऊदल की प्रशस्ति में आल्ह-खण्ड की रचना की। मि० वाटर फील्ड के आल्हा खण्ड को पृथ्वीराजरासो का एक भाग मात्र माना है। किन्तु सर जार्ज ग्रियर्सन आल्हा-खण्ड को रासो से बिलकुल भिन्न मानते है। पं० हजारी प्रसाद द्विवेदी का

कहना है - "इस काल में पृथ्वीराज रासो के समान ही जगनिक के द्वारा लिखा गया परमाल रासो नामक एक ग्रंथ का पता मिलता है। कहते हैं कि कालिंजर के राजा परमाल (परमार्दिदेव) के यहाँ जगनिक नाम के एक भाट थे जिन्होंने महोबे के दो देश प्रसिद्ध वीरों आल्हा और ऊदल के चरित्र पर एक वीर-काव्य लिखा था। फर्रुखाबाद के कलक्टर मि॰ चार्ल्स इलियट ने लोक में प्रचलित इन गीतों के संग्रह 'आल्हखंड' के नाम से छपवाया था। निःसंदेह इस नये रूप में बहुत-सी नई बातें आ गयी हैं और जगनिक के मूल ग्रंथ का क्या रूप था, यह कह सकना कठिन हो गया है। अनुमानतः इस संग्रह का वीरतापूर्ण स्वर तो सुरक्षित है, लेकिन भाषा और कथानकों में बहुत अधिक परिवर्तन हो गया है। इसलिए चंदवरदाई के पृथ्वीराज रासो की तरह इस ग्रंथ को अर्द्धप्रमाणिक कह सकते हैं।"

शारंगधर हम्मीर रासो के रचियता और नाल्ह सिंह विजयपाल रासो के प्रणेता कहे जाते है। हम्मीर रासो में रणथंभौर के राजा हम्मीर का गौरवगान है और विजयपाल रासो में करौली नरेश विजयपाल के युद्धों का ओजपूर्ण वर्णन। किंतु ये ग्रंथ या तो मूल रूप में प्राप्त नहीं है या साधारण कोटि के हैं।

नामकरण :- अनेक इतिहासकार इसे वीरगाथा काल की संज्ञा नहीं देते। श्री राहुल सांकृत्यायन ने आठवीं से बारहवीं शताब्दी तक के काव्य में दो प्रकार के भाव पाये है - (i) सिद्धों की वाणी और

(ii) सामंतों की स्तुति। इसलिए उन्होंने इस काल को सिद्ध-सामंत युग कहा है। डॉ॰ रामकुमार वर्मा ने इस काल को वीरगाथा-काल न कहकर 'चारण-काल' कहा है। संभवतः इस कारण कि इस काल की रचनाओं में जो वीर-रस है वह प्रधान नहीं, माध्यम भर है, प्रधान तो श्रृंगार है। दूसरी बात यह है कि 'पृथ्वीराज' को छोड़कर कोई ऐसा नायक नहीं है जिसे लोकनायक कह सके और जो सच्चे रूप में वीर रस के लिए चरित-नायक बन सके। तीसरी बात यह कि प्रायः समस्त रचनाओं के रचयिता पेशेवर चारण हैं, दरबारी कवि हैं जो लोकमंगल अथवा विश्व-रक्षा की दृष्टि से नहीं वरन् अर्थ और यश-प्राप्ति के लिए, स्वार्थ-साधन के लिए अपने आश्रयदाताओं की स्तुति और प्रशंसा करते हैं। इसी हेतु आचार्य रामचन्द्र शुक्ल और पं॰ हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस काल को हिन्दी-साहित्य का 'आदिकाल' कहकर वीर-गाथा काल नाम से अभिहित तो किया है, परन्तु यह साफ बता दिया है कि "वस्तुतः 'हिंदी का आदिकाल' शब्द एक प्रकार की भ्रामक धारणा की सृष्टि करता है और श्रोता के चित्त में यह भाव पैदा करता है कि यह काल कोई आदिम मनोभावापन्न परंपरा-विनिर्मुक्त काव्य रूढ़ियों से अछूते साहित्य का काल है। किन्तु यह ठीक नहीं है। यह काल बहुत अधिक परंपरा-प्रेमी रूढ़िग्रस्त, सजग और सचेत कवियों का'

काल है। इसमें भावी हिन्दी भाषा और उसके काव्य-रूप अंकुरित हुए है।”

इस प्रकार हिन्दी साहित्य का यह काल वीर-गाथाओं का काल था। वीर गाथाओं में चारण कविगण अपने आश्रयदाता राजाओं का यशोगान करते थे। चरित नायक की श्रेष्ठता प्रदर्शित करने के लिए कवि इतिहास, पुरान, जमीन-आसमान का कुलावा जोड़ता था और अतिरंजित वर्णन करने में अनेक इतिहास-विरुद्ध, भूगोल-विरुद्ध कल्पनाये करता था। अतः इन्हे सच्चे रूप में चरित-काव्य हम नहीं कह सकते है। ये ऐतिहासिक काव्य तो नहीं ही कहे जा सकते। क्योंकि कथा का स्वरूप काल्पनिक होता था। कथा वर्णात्मक और विवरणात्मक अधिक होती थी।